इ:संतुष्ट (2. इप् + सं°) adj. unzufrieden, missvergnügt Hir. 1,22. इ:संघान (2. इप् + सं°) adj. schwer zusammenzufügen, — zu vereinigen, — zu versöhnen: मृह्य इव सुक्षभियो इ:संघानश्च दुर्जनो भवति Райкат. II, 36.

डु:मंघेष (2.डुष्+मं°) adj. dass.ः भिन्ना कि सेना नृपते डु:संघेषा भवल्यु-नु MBa. 3.3827.

ड:सम (2. ड्रप् + सम) adj. = द्वर्जात, स्नसमञ्जस Так. 3,2,6. — Vgl. इ:पम.

द्व:समातिकाम (2. ड्रप् + स°) adj. worüber man schwer hinweg kommt Vutre. 437.

डु:समीद्य (2. डुप् + स°) adj. schwer zu erblicken, — zu Gesicht zu hekommen MBu. 7,1928.

ड:संपाद (2. डप् + सं°) adj. wozu schwer zu gelangen ist: ऋपवर्भ Dagas. 63,3.

डु:मंपाद्य (2. डुष् + मं ं) adj. dass. Сайк. zu Катнор. 3.14. ज्ञानमार्ग-स्य डु:संपाद्यत्वम् 15.

ਤ:सरु (2. ड्रप् + सरु) 1) adj. f. श्रा schwer zu ertragen, unerträglich, unwiderstehlich: कुम्भीपाकान् M. 12,76. तेपामापतता वेग: करिणा उ:-सरु ऽभवत् MBu. 3,2540. 4,767. Hip. 2,9. Hariv.11097. R. Goar. 1,44. 23. 4,29,23. Майн. 146,3. Ragh. 3,37. 11,20. Киманз. 5,42. Çак. 78. Vikr. 73. Катназ. 19,47. Райкат. V, 34. Rаба-Так. 1,184. Ќаинар. 50. Внас. Р. 3,4,23. 17,21. 6,11,9. Vet. 2,10. — 2) m. N. pr. a) eines der 100 Söhne des Dhṛtarashṭra MBu. 1,2447. 2725. 2728. 4541. 4,1151. 7,5564. — b) eines Sohnes des Purukutsa und Vaters des Sambhūtī Matsia-P. in VP. 371, N. 5. — c) eines bösen Dämons Mark. P. 30,38. fgg. — 3) f. श्रा a) Bein. der Çrī MBu. 12,8154. 8156. — b) N. eines Strauchs (नागद्मनी) Rабал. im ÇKDr. — Vgl. उ:पर्, उविषक्, उ-र्प्रसर्क.

र् :सङ्ग्य (2. हुप् + स°) adj. schlechte Gefährten habend, von Allen verlassen MBB. 5, 1861.

द्र:मानिन् (2. दुष् + मा °) m. ein falscher Zeuge R. 3,18,34.

इ:साधिन् m. Thursteher Çabdam. im ÇKDR. - Vgl. देा:साधिक.

इ:साध्य (2. इष् + सा°) adj. 1) schwer zu vollbringen: किं नाम मम इ:साध्यम् स्वार. 14471. 15620. श्रवी: Kam. Nitis. 13,40 = Райкат. II, 26. — 2) mit dem man schwer fertig wird: इगस्या इ:साध्या रिपर्भव-ति Райкат. 56,10. — 3) schwer herzustellen, — zu heilen: संगरि निकृता देव इ:साध्य: स्वार. 16132.

ड:सेट्य (2. ड्रष् + से॰) adj. schwer zu gebrauchen, — zu handhaben, zu behandeln: चपलस्वभावा: ड:सेट्या डर्यास्था भावतस्तथा। प्राज्ञस्य प्राप्तस्येक् पथा वाचस्तथा स्त्रिय: ॥ MBn. 13,2225.

ड:स्त्री (2. इष् + स्त्री) f. ein böses Weib gaṇa युवादि zu P. 5, 1, 130. इ:स्य und इस्य (2. इष् + स्य) adj. f. ज्ञा nicht fest stehend, wankend, sich in steter Unruhe befindend (eig. und übertr.) Buâc. P. 1, 16, 35. 4, 11.21. 24, 61. Mârk. P. 49, 5. Râga-Tar. 4, 375. 691. इस्य (adv.) स्या unwohl sein Amar. 29. = द्वाति dem es schlecht geht, arm, elend AK. 3, 1, 49. H. 358. an. 2, 217. Mrd. th. 8. = मूर्ख thöricht H. an. Mrd. = इ:बिन

द्वःस्थित und द्वस्थित (2. दुष् + स्थित) 1) adj. dass.: न कर्क्शिक्ता-

पि च ड्र:स्थिता मतिर्लभेत वाताकृतनारिवास्परम् Bule P. 1,5, 14. वतस-विवेकस्य कीरणा वृत्तात इति ड्र:स्थितमिव मे कृद्यम् Para 84,1. स-मर्थाकृतापातचित्तासततड्र स्थित Rléa-Tar. 4,479. 6,327. — 2) n. eine unpassende Art zu stehen MBB. 3,14669 (lies: 'स्थिताडु') = 12,3084.

ड:स्वेप (2. द्वप् + स्वेप) adj. schwer zu stehen, n. ein schweres Stehen: मुस्वेपं तुर्धारामु निशितामु — धारणामु तु योगस्य ड:स्वेपमकृतात्मिभ: MBa. 12,11090.

इ:स्नान (2. इष् + स्नान) n. ein schlimmes, unheilvolles Baden Ha-RIV. 3413.

ट्ठ:स्पर्श (2. द्वष् + स्पर्श) 1) adj. schwer zu berühren, — anzufassen: पाणिना शशी MBB. 13,2109. unangenehm zu berühren, für das Gefühl unangenehm MBD. Ç. 20. 21. ववी वायु: सुद्व:स्पर्श: Bnåc. P. 3,17,5. — 2) m. das stachlige Alhagi Maurorum Tournef. AK. 2,4,8,10. MBD. = लाका सिंका Råéan. im ÇKDB. — 3) f. श्रा N. verschiedener Pflanzen: Solanum Jacquini Willd. (vgl. जुद्गः) AK. 2,4,8,12. MBD. Alhagi Maurorum Tournef., Mucuna pruritus Hook., Cassyta filiformis L. Råéan. im ÇKDB. — Suça. 2,78,15. 513,3.

ड[:]स्प्र (2. ड्रष् + स्प्रा m. nom. act.) adj. unangenehm zu berühren, anzufassen: वर्न निर्विषयाकार विषात्रिमव ड्रस्प्रम् Hariv 3645. ड्रास्प्र und ड्रस्प्ष्ट (2. ड्रष् + स्प्ष्ट) 1) n. geringe Berührung: die Thätigkeit der Zunge, durch welche die Laute प, र, ल, व hervorgebracht werden, R.V. Pahr. 13,3. — 2) m. ein durch diese Thätigkeit hervorgebrachter Laut Çirshi 5 in Ind. St. 4,349.

ਤ:स्पाट (2. ड्रप् + स्पाट) m. eine Art Waffe (schwer zu sprengen) H. 787. ड्र:स्पाट oder ड्र:स्पाटार (ड्र:स्पाट + ऋर Speiche) m. H. ç. 147. ड्र:स्वन (2. ड्रप् + स्वन) adj. f. म्रा übel tönend: ड्रन्ड्राभ MBH. 3, 7241. ड्र:स्वन्न (2. ड्रप् + स्वन्न) m. ein böser Traum Gobu. 3, 3, 25. R. Go. R. 2,71,23. ्र्श्न Çâñuh. Gruj. 5, 5. R. 5,27,8. Mânu. P. 31,22. ्नाशन MBH. 13,7048. HARIV. 8439. ्नाश BBAG. P. 8,4,14. ्उपशास्ति 15. ड्रास्वन्न प्रतिकृति MBH. 13,4171.

डःस्वप्रप्रतिवोधन (2. ड्रष् + स्वप्न - प्र॰) adj. schwer aus dem Schlafe zu erwecken R. 5,81,53.

1. डुक्, रेगिय Daarup. 24,4. डुक्रैंति, रोक्त्, डुक्रीयत्, डुक्रीयन्, म्र-धोक्, निर्डक्त्, म्रडक्न्, म्रडक्र्न् (AV. 8,10, 14), डुक्रैम्: म्रध्तत् (P. 3, 1,45. Vop. 9,46) und श्रद्धतत् (vgl. RV. PBAT. 4,41), ध्तैन्, द्वतैन्; द्वरी-क्, हुदै।क्यि, इहुकुम् (हुहुकुम् Buig. P. 5,15,9); धात्त्यति, देगधा Kar. 6 aus Sidda. K. zu Р. 7,2, 10. med.: देएघे, दाक्ते, डुर्के 3. sg., ध्ते 2. sg., हुकूँ, हुक्तेँ und हुकूते 3. pl., हुक्तीत potent., महुकू 3. pl. ved. Schol. zu P. 7,1,8. 41. ध्दव, इकाम् 3. sg., इक्राम् und इक्रताम् 3. pl., partic. डुँकान, डकानँ (R.V.9,107,5. 42,4) und डुँघान (दिवा न यस्य रेतिसा डघी-नाः पन्यांसा पत्ति R.V. 1,100,3); aor. म्रह्जम्य und म्रध्तत P. 7,3,72. 73. 8, 130. 9, 46. युँतत 3. sg. R.V. 6, 48, 12. श्रेंध्तत 3. pl. 9, 2, 3. 110, s. ध्तैत 8,7,3. ध्तीमैंव्हि TS. 1,6,4,3. ध्तैस्व RV. 8,13,25. धोह्ये. — डु-Tधा, देगिध्म, देगिधास् (Çat. Br.). 1) melken, auch vom Ausziehen des Saftes aus den Soma-Pflanzen; dann überh. ausbeuten, Nutzen -. Vortheil ziehen aus; mit dem acc.; act.: धेन्ं न वीसरीमंश्रं इंक्ट्यिदिभिः ŖV. 1,137,3. 3,36,7. म्रधोगिन्द्रे स्तर्यः 4,19,7. पृष्ट्या यहू धरूप्यापया डु-कु: 2,34,10. 36,1. 8,38,3. 61,7. 16. म्रप्स् वा रुस्तेंईड्क: 9,79,4. 2,